प्राक्कथन

प्रा क्क थ न

स्वातंत्र्योत्तर युग हिंदी नाट्य साहित्य का विकासात्मक युग है। इस युग में नाटक विभिन्न प्रणालियों के अंतर्गत विकसित होता रहा। समस्या नाटक, प्रतीक नाटक, गीति नाटक, मिथकीय नाटक, असंगत नाटक, अन्योक्ति नाटक, प्रायोगिकनाटक, लोकनाटक, एकांकी के रूप में उसने विकास की नयी दिशाली। इन नाट्य प्रणालियों के विकास में धर्मवीर भारती, उपेंद्रनाथ अश्क, जगदीशचंद्र माथुर, मोहन राकेश, गिरिश रस्तोगी, सुरेन्द्र वर्मा, ज्ञानदेव अग्निहोत्री, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना मणि मधुकर, बादल सरकार, शंकर शेष आदि नाटककारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रायोगिक धरातल पर डा. शेष के नाटक विशेष सफल रहे। प्रायोगिकदृष्टि से उनका प्रत्येक नाटक अपना विशिष्ट एवं स्वतंत्र स्थान रखता है। स्वातंत्र्योत्तर काल के इन नाटककारों ने हिंदी नाटक के विकास में जो योगदान दिया, उसमें डा. शेष का स्थान विशेष महत्वपूर्ण रहा।

"पोस्टर" डा.शेष का प्रायोगिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण नाटक है, जिसमें शिल्प, शैली, प्रस्तुति, रंगमंच, अभिनय की दृष्टिसे मौलिक प्रयोग, नाटककार का अद्भुत कौशल है। कॉलेज जीवन में मुझे उनका "खजुराहो का शिल्पी" नाटक पढने का मौका मिला जो डा. शेष की नाट्यधर्मी प्रतिभा का मौलिक सृजन है। डा. शेष की नाट्यधर्मी प्रतिभा से मै विशेष प्रभावित हुअी। कुतुहलवश मैंने उनके सभी नाटक पढे। वैसे तो, उनका प्रत्येक नाटक एक नया प्रयोग है। प्रयोगधर्मिता उनके नाटक का प्राणतत्व रहा। प्रायोगिकता को छोडकर नाटक का विचार हो ही नहीं सकता। नाटक भाव, गीत, संगीत, नृत्य,अभिनय, कला, संघर्ष की सामुहिक अभिव्यक्ति है, जो रंगमंच पर संवेद्य बनकर सहृदय को आनंदानुभूति प्रदान

करती है। "पोस्टर" इस नाट्यधर्मिता, प्रयोगधर्मिता की सर्वंकष अभिव्यक्ति है। डा. शेष के रंगधर्मी, नाट्यधर्मी प्रतिभा की उन्मुक्त झाँकी "पोस्टर" में प्रतिबिम्बित हुअी है। पोस्टर का रंगविधान, उसकी प्रायोगिक विशेषताएँ मुझे विशेष रूप से आकर्षित करती रही। साथ ही "पोस्टर" में चित्रित आदिवासी जीवन की वास्तव सच्चाई ने मुझे सोचने को बाध्य किया, क्योंकि "पोस्टर" में चित्रित आदिवासी जीवन का वास्तव, वर्तमान भारतीय आदिवासी जीवन का दाहक वास्तव है, जिसे डा.शेष ने यथार्थ दृष्टि से प्रस्तुत किया है। अत: मैंने एम.फिल के लघु-शोध-प्रबन्ध के लिए प्रस्तुत नाटक को चुन लिया तथा उसका विशेष अध्ययन करने का दृढ संकल्प किया। साथ ही मेरे गुरुवर्य डा. मधुकर हसमनीसजी ने भी इस विषय पर शोधकार्य करने के लिए मुझे प्रोत्साहित किया।

"पोस्टर" का सर्वांग अध्ययन करने के लिए मैंने प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। इन सभी अध्यायों में मैंने क्रमश: हिंदी नाटक साहित्य का विकास, उसमें डा.शेष का स्थान, "पोस्टर" की समस्याएँ, संघर्ष, शैली, शिल्प, प्रायोगिक विशेषताएँ आदि दृष्टि से नाटक का समग्र अनुशीलन प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में मैंने हिंदी नाटक साहित्य का विकासात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। पूर्व भारतेंदु युग से लेकर आधुनिक नाटक के आठवें दशक तक के हिंदी नाट्यसाहित्य की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला है। स्वातंत्र्योत्तर काल के नाटक साहित्य का अनुशीलन करते हुए उसके प्रायोगिक पक्ष पर अधिक चर्चा की है। छटे, सातवें, आठवें दशक के नाटक साहित्य के अंतर्गत डा. शेष के नाटकों पर अलग से प्रकाश डाला गया है, तथा समसामयिक नाट्य चेतना में उनके नाटकों का स्थान मूल्यांकित करने की कोशिश की है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के दूसरे अध्याय में, "पोस्टर" में चित्रित समस्यामूलक आदिवासी परिवेश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। आदिवासी जीवन की समस्यामूलक स्थितियाँ, शिक्षा एवं ज्ञान के अभाव में हुअी आदिवासियों की जीवन त्रासदी, शोषक वर्ग की तानाशाही से सना आदिवासी परिवेश, जिसमें झुलस रही आदिवासी जिंदगीयाँ विभिन्न समस्याओं को जन्म देती है। इन समस्याओं के भीषण स्वरूप को यथार्थ धरातल पर उजागर करने का मैंने प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के तीसरे अध्याय में आदिवासियों के संघर्षमय जीवन पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। जीवन के हर मोड पर आदिवासियों का हो रहा शोषण, उनके मन में संघर्ष चेतना को जागृत करता है। आदिवासी शोषण के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक स्त्री-पुरुष, शोषक-शोषित आदि संघर्ष के विभिन्न स्तर उजागर किए हैं। संघर्ष के आधार पर "पोस्टर" की योग्यता मूल्यांकित करने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के चौथे अध्याय में "पोस्टर" की शैली एवं शिल्पगत विशेषताएँ आँकने का प्रयत्न किया है। कीर्तन शैली के साथ ही "पोस्टर" में प्रयुक्त नृत्त, नृत्यनाट्य, समूहगान एवं समूहनृत्य शैलियों का समन्वय तथा नाटकीय प्रस्तुति में उसकी प्रभावात्मकता पर अलग से प्रकाश डाला है। "पोस्टर" की कथावस्तु, पात्रयोजना, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, वातावरण, उद्देश्य, भाषाशैली, रंगमंचीयता, अभिनेयता, गीतयोजना, शीर्षक का मार्मिक प्रयोग, आदि दृष्टि से "पोस्टर" की विशेषताएँ एवं नाटककार द्वारा किए गए नूतन प्रयोग मूल्यांकित करने की कोशिश की है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के पाँचवे अध्याय में "पोस्टर"

की प्रयोगिकता पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। मंचसज्जा, दृश्ययोजना, प्रकाशव्यवस्था, पार्श्व-ध्वनि संगीत का सार्थक समन्वय, अभिनेय कौशल, कीर्तन शैली का प्रयोग आदि दृष्टि से "पोस्टर" की प्रायोगिक विशेषताओं को प्रस्तुत किया है।

पाँचवे अध्याय के पश्चात प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का उपसंहार प्रस्तुत किया है, जिसमें समस्त अध्यायों का सार संक्षिप्त रूप से दिया है। साथ ही आठवें दशक के नाटक साहित्य के अंतर्गत "पोस्टर"की मौलिकता प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

उपसंहार के पश्चात अंत में परिशिष्ट दिया है, जिसमें डा. शंकर शेष का जीवन पट, साहित्य संपदा, डा. शंकर शेष की कविता लिखावट के रूप में दी है। साथ ही "पोस्टर" नाटक के निर्देशक श्री. जयदेव हट्टंगडी से प्राप्त साक्षात्कार भी प्रश्नावली के रूप में प्रस्तुत किया है। "पोस्टर" के मंचन से सम्बन्धित विभिन्न फोटो दिए हैं, जो मुझे प्रत्यक्ष तथा कुछ संदर्भ ग्रंथो से उपलब्ध हुए। इसके पश्चात डा. शंकर शेष स्मृति समारोह की पत्रिका दी है, तथा डा.शेष के विलासपुर के निवासस्थान की फोटो भी प्रस्तुत की है, जो उनकी जन्मभूमि रही।

इस लघु शोध-प्रबंध के अंत में आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथों की सूची, विभिन्न हिंदी शब्द-कोश आदि की सूची जोड दी है, जो मुझे प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का अनुशीलन करते हुए नितांत सहायक रही। इस लघु-शोध-प्रबंध को मैंने पूरी लगन एवं परिश्रम से सम्पन्न किया है। "पोस्टर" पर इतनी विशद चर्चा करने का शायद मेरा ही पहला प्रयास रहा हो।

ऋणनिर्देश :-

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, मेरी सहायता करनेवाले, समय-समय पर मुझे प्रोत्साहित करनेवाले, मेरे आदरणीय गुरुजन, मेरे मित्र, मेरे हितचिंतक आदि के प्रति कृतज्ञता अर्पित करना मेरा परम कर्तव्य है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध श्रध्देय गुरुवर डा. मधुकर हसमनीसजी के मौलिक मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ है। आपने मुझे प्रबंधविषयक दिशा निर्देशन कर मेरे शोध-कार्य का मार्ग सुकर किया। समय-समय पर आपने मुझे प्रबंध-विषयक मौलिक सुझाव दिए तथा मुझें प्रोत्साहित भी किया। आपने प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का प्रत्येक अध्याय सूक्ष्मता से परखकर मुझे शोधकार्य विषयक निरंतर नयी दृष्टि दी। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध आपकी प्रेरणा एवं मौलिक मार्गदर्शन का ही फल है। आपके प्रति मैं हार्दिक शुक्रगुजार हुँ। सौ. आशा हसमनीसजी ने भी मुझे प्रस्तुत शोधंकार्य के लिए समय-समय पर प्रोत्साहित किया। आपके प्रति भी मैं ऋणी हूँ।

बाळासाहेब देसाई कॉलेज, पाटण के हिंदी विभागाध्यक्ष तथा भूतपूर्व प्राचार्य डा. संपतराव जाधवजी का भी विशेष मार्गदर्शन मुझे प्राप्त हुआ। आपके व्दारा समय-समय पर दिए गए प्रबंध विषयक मौलिक सुझाव एवं प्रोत्साहन मेरे शोधकार्य के पाथेय रहे हैं। आपके प्रति मैं कृतज्ञता अर्पित करती हूँ। महावीर महाविदयालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डा. सुनीलकुमार लवटेजी का भी मार्गदर्शन एवं सहयोग मुझे इस शोधकार्य में मिला। आपके आशिर्वाद एवं शुभकामनाएँ मेरा आत्मबल बढाती रही। अत: आपके प्रति भी मै हार्दिक कृतज्ञ हूँ।

शिवाजी विश्वविदयालय, कोल्हापुर के हिंदी विभागाध्यक्ष डा. पांडुरंग पाटीलजी, अधिव्याख्याता डा. अर्जुन चव्हाणजी ने भी मुझे

समय-समय पर प्रोत्साहित कर मेरा मार्गदर्शन किया। आपके प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ।

हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य श्री. आर.डी.राडेजी तथा हिंदी विभागाध्यक्ष प्रा.दीपक फलालेजी ने भी इस शोधकार्य के लिए मुझे समय-समय पर प्रेरणा दी। अत: उनके प्रति भी मैं अपने धन्यवाद व्यक्त करती हूँ।

विश्वासराव नाईक महाविद्यालय, शिराला के प्राचार्य श्री. शिवाजी कुंभार तथा ग्रंथपाल श्री. दिलावर मोमीनजी ने भी मुझे इस शोधकार्य के लिए संदर्भ ग्रंथ उपलब्ध कर विशेष सहयोग दिया तथा प्रोत्साहित किया। आपके प्रति धन्यवाद व्यक्त करना तो मेरा परम कर्तव्य है। शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के ग्रंथालय कर्मचारी श्री. गुरव सर तथा ग्रंथालय के अन्य कर्मचारी वर्ग ने भी संदर्भ ग्रंथ ढूँढने में मेरी सहायता की। आप सब के प्रति मैं ऋणी हूँ।

'पोस्टर' की प्रायोगिक विशेषताओं के मूल्यांकन में मुझे सौभाग्यवश इस नाटक के निर्देशक श्री. जयदेव हट्टंगडी तथा रोहिणी हट्टंगडी से चर्चा करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। २८ अक्तूबर, १९९६ में मुंबई में "डा. शंकर शेष स्मृति समारोह" के रूप में एक विशेष नाट्य प्रयोग का आयोजन किया गया था। इस समारोह की संयोजिका थी, श्रीमती वसुधा सहस्रबुध्देजी। इस प्रयोग में "पोस्टर" के गीत भी प्रस्तुत किए गए थे। निर्देशक श्री. जयदेव हट्टंगडी तथा रोहिणी हट्टंगडी से मिलकर 'पोस्टर' की अभिनेयता एवं मंचीयता को लेकर मैंने काफी बहस की। आपके व्दारा दिए गए निर्देशन विषयक अनुभव तथा मौलिक सुझावों ने, प्रायोगिकता विषयक मेरी आशकाएं दूर हुई तथा मेरा मार्गदर्शन भी हुआ। अत: उनके प्रति मैं विशेष रूप से ऋणी हूँ और हमेशा

ही रहूँगी। इस समारोह की संयोजिका प्रा. वसुधा सहस्रबुध्देजी ने भी मुझे इस कार्य में पूरा सहयोग देकर मुझे प्रोत्साहित किया। अत: आपके प्रति भी मैं हार्दिक कृतज्ञ हूँ।

मेरे माता-पिता, मेरे भाई तथा मेरे रिश्तेदार भी इस शोध-कार्य में मुझे सहयोग देते रहे। आपके आशिर्वाद एवं प्रेरणा मेरा उत्साह बढ़ाते रहे।

संजय फोटो शिराला, के छायाचित्रकार श्री. संजय मिरजकरजी ने डा. शेष की फोटो कापी को कॉपिंग कर मेरी मदद की। मुंबई के छायाचित्रकार ने भी "पोस्टर" की गीतयोजना के फोटो-कापी कॉपिंग कर मेरी मदद की। अत: उनके प्रति भी मैं अपने धन्यवाद व्यक्त करती हूँ।

मेरे सहपाठी एवं मित्र प्रा. अशोक साळुंखे, प्रा. अरुण गंभीरे, प्रा. नाजिम शेख, श्री. भारत कुंभेकर तथा सहेलियाँ प्रा. कल्पना पाटील, प्रा. अपर्णा पाध्ये, प्रा. तेजस्विनि जाधव, कु. प्रतिमा चिले आदि मित्र-परिवार ने मुझे इस कार्य में हमेशा प्रोत्साहित किया, मैं उनकी भी ऋणी हूँ।

शोधकार्य में मेरी दिशा निर्देशित करनेवाले मेरी ज्ञानसाधना में सहायक, मार्गदर्शक विभिन्न संदर्भ ग्रंथ, पत्रिका, शब्दकोष तथा उनके लेखक, प्रकाशक, संपादक आदि के प्रति भी मैं विशेष रूप से ऋणी हूँ और हमेशा ही रहूँगी। इसके साथ ही प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का टंकलेखन करनेवाली कुमारी माया विलासराव मोहिते ने समय पर टंकलेखन कर मेरी सहायता की। उनके प्रति भी मैं धन्यवाद व्यक्त करती हूँ।

इसके साथ ही इस शोधकार्य में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से मेरी सहायता करनेवाले, मुझे आशिर्वाद देनेवाले मेरे शुभचिंतक, विद्वज्जन,

गुरुजन आदि के प्रति भी मैं कृतज्ञता भाव व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे सहयोग, सुझाव एवं आशीर्वाद देकर अनुगृहित किया।

टीप :- 'पोस्टर' नाटक का सम्ग्र अनुशीलन करते हुए इस बात को स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है कि प्रस्तुत पुस्तक में 'पोस्टर' के एक साथ दो प्रारूप मिलते हैं - मूल प्रारूप और संशोधित प्रारूप। रंगमंचीय सुविधाओं की दृष्टि से मूल प्रारूप में कुछ परिवर्तन कर, संशोधित प्रारूप प्रस्तुत किया गया है। अतः यहाँ मैंने अध्ययनार्थ संशोधित प्रारूप को ही लिया है। उसी के आधारपर प्रस्तुत नाट्यकृति का मूल्यांकन किया है।